दिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। उववादो णत्थि। मारणंतियपरिणदेहि सत्त चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। केण ऊणा? इसिपब्भारपुढवीए उवरिमबाहल्लेण।

**सम्मामिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८४ ॥**

एदस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्ताणिओगद्दारोरालियकायजोगसम्मामिच्छादिट्ठिसुत्तपरूवणाए तुल्ला। सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि ओरालियसम्मामिच्छादिट्ठीहि तीदाणागदकालेसु तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। मारणंतिय-उववादा णत्थि।

**असंजदसम्मादिट्ठिहि-संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंज्जदिभागो ॥ ८५ ॥**

---

सासादनसम्यग्दृष्टियोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। इन जीवोंके उपपादपद नहीं होता है। मारणान्तिकपदपरिणत उक्त जीवोंने कुछ कम सात बटे चौदह ( $\frac{7}{14}$ ) भाग स्पर्श किये हैं।

शंका– यहांपर कुछ कमसे कितना कम क्षेत्र समझना चाहिए?

समाधान– ईषत्प्राग्भार पृथिवीके उपरिम भागके बाहल्यप्रमाणसे कुछ कम क्षेत्र समझना चाहिए।

**औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ८४ ॥**

इस सूत्रकी प्ररूपणा क्षेत्रानुयोगद्वारमें वर्णित औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके क्षेत्रका वर्णन करनेवाले सूत्रकी प्ररूपणाके तुल्य है। स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकपदपरिणत औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंने अतीत और अनागतकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। औदारिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद, ये दो पद नहीं होते हैं।

**औदारिककाययोगी, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ८५ ॥**

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपरिणदेहि असंजदसम्मादिट्ठीहि संजदासंजदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो वट्टमाणद्धाए फोसिदो ।

**छ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ८६ ॥**

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि असंजदसम्मादिट्ठीहि संजदासंजदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो । एसो 'वा' सद्दसूचिदत्थो । मारणंतियपरिणदेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, अच्चुदकप्पादो उवरि असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदाणमुववादाभावादो ।

**पमत्तसंजदप्पहुडि जाव सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८७ ॥**

एदेसिमट्ठण्हं गुणट्ठाणाणं तिण्णि वि काले अस्सिदूण परूवणं कीरमाणे

---

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक और मारणान्तिकसमुद्घातपदपरिणत असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग, और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र वर्तमानकालमें स्पर्श किया है ।

औदारिककाययोगी उक्त दोनों गुणस्थानवर्ती जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ ८६ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घात, इन पदोंसे परिणत औदारिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयतोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । यह 'वा' शब्दसे सूचित अर्थ है । मारणान्तिकसमुद्घात पदपरिणत उक्त जीवोंने कुछ कम छह बटे चौदह ($\frac{६}{१४}$) भाग स्पर्श किये हैं, क्योंकि, अच्युतकल्पसे ऊपर असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीवोंका उपपाद नहीं होता है ।

प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती औदारिककाययोगी जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ८७ ॥

इन आठों गुणस्थानोंकी तीनों ही कालोंका आश्रय करके स्पर्शनप्ररूपणा करनेपर

खेत्तफोसणाणं मूलोघपमत्तादिपरूवणाए समाणा परूवणा कादव्वा। णवरि सजोगिकेवलिम्हि कवाड-पदर-लोगपूरणाणि णत्थि[1]। तं कधं णव्वदे ? सजोगिकेवलीहि लोगस्स असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा फोसिदो त्ति सुत्तेण अणिद्दिट्ठत्तादो।

ओरालियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ८८ ॥

सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-मारणंतिय-उववादपरिणदेहि ओरालियमिस्सकायजोगिमिच्छादिट्ठीहि तिसु वि कालेसु जेण सव्वलोगो फोसिदो, तेण ओघत्तमेदेसिं ण विरुज्झदे। विहारवदिसत्थाण-वेउव्वियपदाणमेत्थाभावा णोघत्तं जुज्जदे ? होदु णाम

---

क्षेत्र और स्पर्शन अनुयोगद्वारके मूलोघ प्रमत्तादि गुणस्थानोंकी प्ररूपणाके समान प्ररूपणा करनी चाहिए। विशेष बात यह है कि सयोगिकेवली गुणस्थानमें कपाट, प्रतर और लोकपूरणसमुद्घात नहीं होते हैं, (क्योंकि, औदारिककाययोगकी अवस्थामें केवल एक दंडसमुद्घात ही होता है।)

शंका– यह कैसे जानते हैं कि औदारिककाययोगी सयोगिकेवलीके कपाट आदि तीन समुद्घात नहीं होते हैं ?

समाधान– 'यह बात सयोगिकेवलियोंने लोकका असंख्यात बहुभाग और सर्वलोक स्पर्श किया है' इस सूत्रसे निर्दिष्ट नहीं की गई है। (अतः हम जानते हैं कि औदारिककाययोगी सयोगिजिनमें कपाटादि तीन समुद्घात नहीं होते हैं।)

विशेषार्थ– औदारिककाययोगकी अवस्थामें केवल एक दंडसमुद्घात ही होता है, कपाटसमुद्घात आदि नहीं। इसका कारण यह है कि कपाटसमुद्घातमें औदारिकमिश्रकाययोग, और प्रतर तथा लोकपूरणसमुद्घातमें कार्मणकाययोग होता है, ऐसा नियम है। इसलिए यहां, औदारिककाययोगकी प्ररूपणा करते समय सयोगिकेवलीमें कपाट, प्रतर और लोकपूरणसमुद्घात नहीं होते हैं, ऐसा कहा है।

औदारिकमिश्रकाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान सर्वलोक है ॥ ८८ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषाय, मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदपरिणत औदारिकमिश्रककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंने तीनों ही कालोंमें चूंकि सर्वलोक स्पर्श किया है, इसलिए ओघपना इन पदोंवाले जीवोंसे विरोधको प्राप्त नहीं होता है।

शंका– औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें विहारवत्स्वस्थान और वैक्रियिकसमुद्घात, इन दो पदोंका अभाव होनेसे ओघपना नहीं बनता है, इसलिए सूत्रमें 'ओघ' पद नहीं देना चाहिए ?

समाधान– औदारिकमिश्रकाययोगी जीवोंके विहारवत्स्वस्थान और वैक्रियिक-

---

१ ओरालं दंडदुगे कवाडजुगले य तस्स मिस्सं तु। पदरे य लोगपूरे कम्मेव य होदि णायव्वो ॥ गो. क. ५८७.

एदेसिं दोण्हं पि पदाणमभावो, तधावि पदसंखाविवक्खाभावा विज्जमाणपदाणं फोसणस्स ओघपदफोसणेण तुल्लत्तमत्थि त्ति ओघत्तं ण विरुज्झदे ।

सासणसम्माइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ८९ ॥

एदेसिं तिण्हं गुणट्ठाणाणं वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगो । सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-उववादपरिणदओरालियमिस्ससासणसम्मादिट्ठीहि अदीदकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो । कधं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तं ? देव-णेरइयमणुस्स-तिरिक्खसासणसम्मादिट्ठीहि तिरिक्खमणुस्सेसुप्पज्जिय सरीरं घेत्तूण ओरालियमिस्सकायजोगेण सह सासणगुणमुव्वहंतेहि अदीदकाले संखेज्जंगुलबाहल्लरज्जुपदरं मज्झिल्लसमुद्दवज्जं सव्वं जेण फुसिज्जदि तेण तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो त्ति वयणं जुज्जदे । एत्थ विहार-वेउव्विय-मारणंतिय-पदाणि णत्थि, एदेसिमोरालियमिस्सकायजोगेण सहअवट्ठाण-

---

समुद्घात, इन दो पदोंका अभाव भलेही रहा आवे, तथापि पदोंकी संख्याकीविवक्षा न करनेसे उनमें विद्यमान पदोंके स्पर्शनकी ओघपदके स्पर्शनके साथ तुल्यता है ही, इसलिए ओघपना विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। ८९ ।।

इन तीन ही गुणस्थानोंके स्पर्शनकी वर्तमानकालिक प्ररूपणा क्षेत्रके समान है । स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषायसमुद्घात और उपपादपदपरिणत औदारिकमिश्रकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने अतीतकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है ।

शंका– तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग कैसे कहा ?

समाधान– चूंकि देव, नारकी, मनुष्य और तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने (यथासंभव) तिर्यंच और मनुष्योंमें उत्पन्न होकर शरीरको ग्रहण करके औदारिकमिश्रकाययोगके साथ सासादनगुणस्थानको धारण करते हुए अतीतकालमें बीचके समुद्रको छोडकर संख्यात अंगुल बाहल्यवाले सम्पूर्ण राजुप्रतररूप क्षेत्रका स्पर्श किया है, इसलिए 'तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग' यह वचन युक्तियुक्त है ।

यहां पर विहारवत्स्वस्थान, वैक्रियिक और मारणान्तिक पद नहीं होते हैं, क्योंकि, इन पदोंका औदारिकमिश्रकाययोगके साथ अवस्थानका विरोध है । किन्तु उपपादपद होता है, क्योंकि, सासादनगुणस्थानके साथ अक्रमसे (युगपत्) उपात्त भवशरीरके प्रथम समयमें

विरोहा। उववादो पुण अत्थि, सासणगुणेण सह अक्कमेण उवात्तभवसरीरपढमसमए उववादोवलंभा। मिच्छादिट्ठीणं पुण मारणंतिय-उववादपदाणि लब्भंति, अणंतो, ओरालियमिस्सेइंदियअपज्जत्तरासी सट्ठाणे परट्ठाणे च वक्कमणोवक्कमणं करेमाणो लब्भदि त्ति। सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-उववादपरिणदेहि असंजदसम्मादिट्ठीहि ओरालियमिस्सकायजोगीहि तीदे काले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। कधं तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तं? ण, पुव्वं तिरिक्ख-मणुस्सेसु आउअं बंधिय पच्छा सम्मत्तं घेत्तूण दंसणमोहणीयं खविय बद्धाउवसेण भोगभूमिसंठाणअसंखेज्जदीवेसु उप्पण्णेहि भव-सरीरग्गहणपढमसमए वट्टमाणेहि ओरालियमिस्सकायजोगअसंजदसम्मादिट्ठीहि अदीदकाले फोसिदतिरियलोगस्स संखेज्जदिभागुवलंभा। कवाडगदेहि सजोगिकेवलीहि ओरालियमिस्सकायजोगे वट्टमाणेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो; अदीदेण तिरियलोगादो संखेज्जगुणो फोसिदो। एत्थ कवाडखेत्तादो जगपदरुप्पायणविधाणं जाणिय वत्तव्वं।

---

उपपाद पाया जाता है। मिथ्यादृष्टि जीवोंके भी मारणान्तिक और उपपादपद पाये जाते हैं, क्योंकि, अनन्तसंख्यक औदारिकमिश्रकाययोगी एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि, स्वस्थान और परस्थानमें अपक्रमण और उपक्रमण करती हुई, अर्थात् जाती आती, पाई जाती है। स्वस्थान-स्वस्थान, वेदना, कषायसमुद्घात और उपपादपदपरिणत औदारिकमिश्रकाययोगी असंयत-सम्यग्दृष्टि जीवोंने अतीतकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है।

शंका— औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टियोंके उपपादक्षेत्रको तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग कैसे कहा?

समाधान— नहीं, क्योंकि, पूर्वमें तिर्यंच और मनुष्योंमें आयुको बांधकर पीछे सम्यक्त्वको ग्रहण कर, और दर्शनमोहनीयका क्षय करके बांधी हुई आयुके वशसे भोगभूमिकी रचनावाले असंख्यात द्वीपोंमें उत्पन्न हुए, तथा, भव-शरीरके ग्रहण करनेके प्रथम समयमें वर्तमान, ऐसे औदारिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके द्वारा अतीतकालमें स्पर्श किया गया क्षेत्र तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग पाया जाता है।

कपाटसमुद्घातको प्राप्त, औदारिकमिश्रकाययोगमें वर्तमान सयोगिकेवलियोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। अतीतकालकी अपेक्षासे तिर्यग्लोकसे संख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। यहां पर कपाटसमुद्घातगत क्षेत्रकी अपेक्षासे स्पर्शनक्षेत्र-सम्बन्धी जगत्प्रतरके उत्पादनका विधान जान करके कहना चाहिए। (इसके लिए देखो क्षेत्रप्ररूपणा पृ. ४९ आदि)।

**वेउव्वियकायजोगीसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९० ॥**

एदं सुत्तं जेण वट्टमाणकालपडिबद्धं तेणेदस्स वक्खाणे कीरमाणे जधा खेत्ताणिओगद्दारे वेउव्वियकायजोगिमिच्छाइट्ठिपडिबद्धसुत्तस्स वक्खाणं कदं, तधा एत्थ वि कायव्वं ।

**अट्ठ तेरह चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ९१ ॥**

सत्थाणसत्थाणपरिणद-वेउव्वियमिच्छादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो । विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा फोसिदा । उववादो णत्थि । मारणंतियपरिणदेहि तेरह चोद्दसभागा फोसिदा, हेट्ठा छ, उवरि सत्त रज्जू । घणलोगमेगरूवस्स अट्ठतेरसभागूण-सत्तावीसरूवेहि खंडिदएगखंडं फोसंति त्ति वुत्तं होइ ।

---

वैक्रियिककाययोगियोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ९० ॥

चूंकि यह सूत्र वर्तमानकालसे सम्बद्ध है, इसलिए इसका व्याख्यान करने पर जिस प्रकारसे क्षेत्रानुयोगद्वारमें वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंसे प्रतिबद्ध सूत्रका व्याख्यान किया है, उसी प्रकारसे यहां पर भी करना चाहिए ।

वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंने तीनों कालोंकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह, और कुछ कम तेरह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ ९१ ॥

स्वस्थानस्वस्थानपदपरिणत वैक्रियिककाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है । विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, और वैक्रियिकसमुद्घातपदपरिणत उक्त जीवोंने कुछ कम आठ बटे चौदह ( ८/१४ ) भाग स्पर्श किये हैं । यहां पर उपपादपद नहीं होता है, ( क्योंकि, मिश्रयोग और कार्मणकाययोगके सिवाय अन्य योगोंके साथ उपपादपदका सहानवस्थानलक्षण विरोध है ) । मारणान्तिकसमुद्घातपदपरिणत उक्त जीवोंने ( कुछ कम ) तेरह बटे चौदह ( १३/१४ ) भाग स्पर्श किये हैं, जो कि मेरुतलसे नीचे छह राजु और ऊपर सात राजु जानना चाहिए । घनाकारलोकको एक रूपके आठ बटे तेरह ( ८/१३ ) भागसे कम सत्ताइस ( २६ ५/१३ ) रूपोंसे खंडित ( विभक्त ) करने पर एक खंड प्रमाण क्षेत्रका स्पर्श करते हैं, ऐसा अर्थ कहा गया समझना चाहिए ।

सासणसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ९२ ॥

एदस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगो। सत्थाणसत्थाणपरिणदवेउव्वियकायजोगिसासणसम्मादिट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो। एत्थ तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागत्तपरूवणं पुव्वं व वत्तव्वं विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा फोसिदा। उववादो णत्थि। मारणंतियपरिणदेहि बारह चोद्दसभागा फोसिदा। तेणोघमिदि जुज्जदे।

सम्मामिच्छादिट्ठी असंजदसम्मादिट्ठी ओघं ॥ ९३ ॥

जेणेदेसिं वट्टमाणपरूवणा खेत्तोघपरूवणाए तुल्ला, तेणोघं होदि। अदीदपरूवणा वि फोसणोघेण तुल्ला। तं जहा– सत्थाणसत्थाणपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा

---

वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघस्पर्शनके समान है ॥ ९२ ॥

इस सूत्रकी वर्तमान स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है। स्वस्थानस्वस्थानपदपरिणत वैक्रियिककाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। यहां पर तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागपनेकी प्ररूपणा पूर्वके समान ही करनी चाहिए। विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घात, इन पदोंसे परिणत वैक्रियिककाययोगी जीवोंने कुछ कम आठ बटे चौदह ($\frac{8}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं। इनके उपपादपद नहीं होता है। मारणान्तिकसमुद्घातपदसे परिणत उक्त जीवोंने बारह बटे चौदह ($\frac{12}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं। इसलिए सूत्रमें दिया गया 'ओघ' यह पद युक्तिसंगत है।

वैक्रियिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका स्पर्शन ओघके समान है ॥ ९३ ॥

चूंकि इन दोनों गुणस्थानवर्ती जीवोंकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रसम्बन्धी ओघप्ररूपणाके तुल्य है, इसलिए उनकी स्पर्शनप्ररूपणा ओघके तुल्य होती है। अतीतकालिक स्पर्शनप्ररूपणा भी ओघस्पर्शनप्ररूपणाके समान है। वह इस प्रकारसे है– स्वस्थानस्वस्थानपदपरिणत वैक्रियिककाययोगी सम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक और मारणान्तिकपदपरिणत उक्त जीवोंने कुछ कम आठ बटे चौदह ($\frac{8}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं।

वेसूणा फोसिदा। असंजदसम्मादिट्ठिस्स उववादो णत्थि। सम्मामिच्छादिट्ठिस्स मारणंतिय-उववादो णत्थि। तेणेत्थ वि ओघत्तमेदेसिं जुज्जदे।

**वेउव्वियमिस्सकायजोगीसु मिच्छादिट्ठि-सासणसम्मादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदि-भागो ॥ ९४ ॥**

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगो। सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय उववादपरिणदवेउव्वियमिस्सकायजोगिमिच्छादिट्ठीहि अदीदकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। विहारवदिसत्थाण-वेउव्विय-मारणंतियपदाणि णत्थि। सासणसम्मादिट्ठिस्स वि एवं चेव वत्तव्वं, वाणवेंतरजोदिसियदेवाणमसंखेज्जावासेसु तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमोट्ठहिय ट्ठिदे सासणाणमुप्पत्तिदंसणादो। असंजदसम्माइट्ठीहि सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-उववादपरिणदेहि चउण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, वाणवेंतर-जोदिसियभवणवासिएसु एदेसिमुववादाभावा;

---

वैक्रियिककाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंके उपपादपद नहीं होता है। वैक्रियिककाययोगी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद, ये दो पद नहीं होते हैं। इसलिए यहां पर भी ओघपना बन जाता है।

**वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ९४ ॥**

इस सूत्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रके समान है। स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषाय और उपपादपदरिणत वैक्रियिकमिश्रकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंने अतीतकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग, और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंके विहारवत्स्वस्थान, वैक्रियिक और मारणान्तिकसमुद्घात, ये पद नहीं होते हैं। सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानकी भी स्पर्शनप्ररूपणा इसी प्रकारसे कहनी चाहिए। तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागको व्याप्त करके स्थित वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके असंख्यात आवासोंमें सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंकी उत्पत्ति देखी जाती है। स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषाय और उपपादपदपरिणत वैक्रियिकमिश्रकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, क्योंकि,

सम्माइट्ठिउववादपाओग्गसोधम्मादिउवरिमविमाणाणं तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो चेव अवट्ठाणादो ।

**आहारकायजोगि–आहारमिस्सकायजोगीसु पमत्तसंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९५ ॥**

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगा। सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि आहारकायजोगिपमत्तसंजदेहि तीदे काले चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो । उववाद वेउव्वियं णत्थि । मारणंतियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणो । आहारमिस्सकायजोगिपमत्तसंजदेहि सत्थाण-वेदण-कसायपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो ।

**कम्मइयकायजोगीसु मिच्छादिट्ठी ओघं ॥ ९६ ॥**

सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-उववादपरिणदेहि मिच्छादिट्ठीहि तिसु वि कालेसु

---

वानव्यन्तर, ज्योतिष्क और भवनवासी देवोंमें इनका, अर्थात् वैक्रियिकमिश्रकाययोगी जीवोंका उपपाद नहीं होता है; सम्यग्दृष्टि जीवोंके उपपादके प्रायोग्य सौधर्मादि उपरिम विमानोंका तिर्यग्लोकके असंख्यातवें भागमें ही अवस्थान देखा जाता है ।

**आहारककाययोगी और आहारकमिश्रकाययोगी जीवोंमें प्रमत्तसंयतोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ९५ ॥**

इस सूत्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है। स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना और कषायसमुद्घातपरिणत आहारककाययोगी प्रमत्तसंयत जीवोंने अतीतकालमें सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग, और मनुष्य क्षेत्रका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है। आहारककाययोगियोंके उपपाद और वैक्रियिकपद नहीं होते हैं। मारणान्तिकपदपरिणत आहारककाययोगी जीवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। स्वस्थान, वेदना और कषायसमुद्घात, इन पदोंसे परिणत आहारकमिश्रकाययोगी प्रमत्तसंयतोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।

**कार्मणकाययोगी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि जीवोंकी स्पर्शनप्ररूपणा ओघके समान है ॥ ९६ ॥**

स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषाय और उपपादपदपरिणत कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टि जीवोंने तीनोंही कालोंमें चूंकि सर्वलोक स्पर्श किया है, इसलिए सूत्रमें 'ओघ' ऐसा

जेण सव्वलोगो फोसिदो, तेण सुत्ते ओघमिदि वुत्तं। एत्थ विहारवदिसत्थाण-वेउव्विय-मारणंतियपदाणि णत्थि।

**सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९७ ॥**

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगा।

**एक्कारह चोद्दसभागा देसूणा ॥ ९८ ॥**

एत्थ उववादवदिरित्तसेसपदाणि णत्थि, कम्मइयकायजोगिविवक्खादो। उववादे वट्टमाणा सासणा हेट्ठा पंच, उवरि छ रज्जूओ फुसंति त्ति एक्कारह चोद्दसभागा फोसिदखेत्तं होदि।

**असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ९९ ॥**

एदस्स परूवणा खेत्तभंगो, वट्टमाणकालपडिबद्धत्तादो।

**छ चोद्दसभागा देसूणा ॥ १०० ॥**

---

पद कहा है। यहां, अर्थात् कार्मणकाययोगी मिथ्यादृष्टियोंके, विहारवत्स्वस्थान, वैक्रियिक और मारणान्तिकसमुद्घात, इतने पद नहीं होते हैं।

कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टियोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ९७ ॥

इस सूत्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रके समान है।

कार्मणकाययोगी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने तीनों कालोंकी अपेक्षा कुछ कम ग्यारह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ ९८ ॥

यहांपर उपपादपदको छोड़कर शेष पद नहीं हैं, क्योंकि, कार्मणकाययोगकी विवक्षा की गई है। उपपादपदमें वर्तमान सासादनसम्यग्दृष्टि जीव मेरुके मूलभागसे नीचे पांच राजु और ऊपर अच्युतकल्पतक छह राजु प्रमाण क्षेत्रका स्पर्शन करते हैं, इसलिए ग्यारह बटे चौदह ($\frac{11}{14}$) भाग प्रमाण स्पर्श किया हुआ क्षेत्र हो जाता है।

कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ९९ ॥

वर्तमानकालसे प्रतिसंबद्ध होनेसे इस सूत्रकी स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है।

कार्मणकाययोगी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने तीनों कालोंकी अपेक्षासे कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ १०० ॥

एत्थ वि उववादपदमेक्कं चेव। तिरिक्खासंजदसम्माइट्ठिणो जेणुवरि छ रज्जूओ गंतूणुप्पज्जंति, तेण फोसणखेत्तपरूवणं छ-चोद्दसभागमेत्तं होदि। हेट्ठा फोसणं पंचरज्जुपमाणं ण लब्भदे, णेरइयासंजदसम्मादिट्ठीणं तिरिक्खेसुववादाभावा।

**सजोगिकेवलीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जा भागा सव्वलोगो वा ॥ १०१ ॥**

पदरगदकेवलीहि लोगस्स असंखेज्जा भागा फोसिदा, लोगपेरंतट्ठिदवादवलएसु अपविट्ठजीवपदेसत्तादो। लोगपूरणे सव्वलोगो फोसिदो, वादवलएसु वि पविट्ठजीवपदेसत्तादो।

एवं जोगमग्गणा समत्ता।

**वेदाणुवादेण इत्थिवेद-पुरिसवेदएसु मिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ १०२ ॥**

एदस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्तभंगो, वट्टमाणकालपडिबद्धत्तादो।

---

यहां पर भी केवल उपपादपदही होता है। तिर्यंच असंयतसम्यग्दृष्टि जीव चूंकि मेरुतलसे ऊपर छह राजु जाकरके उत्पन्न होते हैं, इसलिए स्पर्शनक्षेत्रकी प्ररूपणा छह बटे चौदह ($\frac{6}{14}$) भाग प्रमाण होती है। मेरुतलसे नीचे पांच राजु प्रमाण स्पर्शनक्षेत्र नहीं पाया जाता है, क्योंकि, नारकी असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंका तिर्यंचोंमें उपपाद नहीं होता है।

कार्मणकाययोगी सयोगिकेवलियोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां बहुभाग और सर्वलोक स्पर्श किया है॥ १०१ ॥

प्रतरसमुद्घातको प्राप्त केवलियोंने लोकके असंख्यात बहुभाग स्पर्श किये हैं, क्योंकि, लोकपर्यंत स्थित वातवलयोंमें केवली भगवानके आत्मप्रदेश प्रतरसमुद्घातमें प्रवेश नहीं करते हैं। लोकपूरणसमुद्घातमें सर्वलोक स्पर्श किया है, क्योंकि, लोकके चारों ओर व्याप्त वातवलयोंमें भी केवली भगवानके आत्मप्रदेश प्रविष्ट हो जाते हैं।

इसप्रकार योगमार्गणा समाप्त हुई।

वेदमार्गणाके अनुवादसे स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है॥ १०२ ॥

वर्तमानकालसे सम्बद्ध होनेके कारण इस सूत्रकी प्ररूपणा क्षेत्रके समान है।

---

१ वेदानुवादेन-स्त्रीपुंवेदैर्मिथ्यादृष्टिभिर्लोकस्यासंख्येयभागः स्पृष्टः अष्टौ नव चतुर्दशभागा वा देशोनाः सर्वलोको वा। स सि. १, ८.

**अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा, सव्वलोगो वा ॥ १०३ ॥**

सत्थाणत्थेहि मिच्छाविट्ठीहि अदीदकाले तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो। एत्थ वाणवेंतर-जोदिसियावासे संखेज्जजोयणबाहल्लं रज्जुपदरं च घेत्तूण तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो साहेदव्वो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा फोसिदा, अट्ठरज्जुबाहल्लं–रज्जुपदरपरिब्भमणसत्तिजुत्तदेवित्थि–पुरिसवेदमिच्छाविट्ठीणमुवलंभादो। मारणंतिय-उववाद-परिणदेहि सव्वलोगो फोसिदो, दुपदपरिणद-मिच्छादिट्ठीणमगम्मपदेसाभावादो।

**सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ १०४ ॥**

एदस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्तभंगो, वट्टमाणकालपडिबद्धत्तादो।

**अट्ठ णव चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १०५ ॥**

---

स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग तथा सर्वलोक स्पर्श किया है ॥ १०३ ॥

स्वस्थानस्थ स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंने अतीतकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। यहां पर वानव्यन्तर और ज्योतिष्क देवोंके आवासोंको, तथा संख्यात योजन प्रमाण बाहल्यवाले राजुप्रतरको ग्रहण करके तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग साधलेना चाहिए। विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घातपरिणत उक्त जीवोंने आठ बटे चौदह ($\frac{8}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं, क्योंकि, आठ राजु बाहल्यवाले राजुप्रतरप्रमाण क्षेत्रमें परिभ्रमणकी शक्तिसे युक्त देव, स्त्री और पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीव पाये जाते हैं। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादपदपरिणत उक्त जीवोंने सर्वलोक स्पर्श किया है, क्योंकि, मारणान्तिक और उपपादपद, इन दोनों पदोंसे परिणत स्त्री और पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंके अगम्यप्रदेशका अभाव है।

स्त्री और पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १०४ ॥

वर्तमानकालसे सम्बद्ध होनेके कारण इस सूत्रकी प्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है।

स्त्री और पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टियोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह तथा नौ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ १०५ ॥

---

१ सासादनसम्यग्दृष्टिभिर्लोकस्यासंख्येयभागः अष्टौ नव चतुर्दशभागा वा देशोनाः। स. सि. १, ८.

सत्थाणत्थेहि सासणसम्माइट्ठीहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, अदीदकालविवक्खादो। एत्थ वि पुव्वं व तिण्णि खेत्ताणि घेत्तूण तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो दरिसेदव्वो। एसो 'वा' सद्दट्ठो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, अट्ठरज्जुबाहल्लरज्जुपदरब्भंतरे देवित्थि-पुरिससासणाणं गमणागमणं पडि पडिसेहाभावा। मारणंतियपरिणदेहि णव चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। हेट्ठा पंच रज्जू फोसणं किण्ण लब्भदे ? ण, णेरइएहिंतो इत्थि-पुरिसवेदे सासणाणं तिरिक्ख-मणुस्सेसु मारणंतियमेल्लमाणाणमभावादो, तिरिक्खित्थि-पुरिसवेदसासणाणं णिरयगदिं मारणंतियं मेल्लमाणाणमभावादो च। उववादपरिणदेहि एक्कारह चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। सुत्ते उववादफोसणं किण्ण वुत्तं ? ण, फोसणसुत्ते उववादविवक्खाभावा। णिरयादो आगच्छंतेहि पंच रज्जू, देवेहिंतो

---

उक्त दोनों वेदवाले स्वस्थानस्थ सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, क्योंकि, यहांपर अतीतकालकी विवक्षा है। यहांपर भी पूर्वके समान तीनों क्षेत्रोंको ग्रहण करके तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग दर्शाना चाहिए। यही सूत्रपठित 'वा' शब्दका अर्थ है। विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घातपरिणत उक्त जीवोंने कुछ कम आठ बटे चौदह ($\frac{8}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं; क्योंकि, आठ राजु बाहल्यवाले राजुप्रतरके भीतर देव-स्त्री और पुरुषवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंके गमनागमनके प्रति प्रतिषेधका अभाव है। मारणान्तिकसमुद्घातपरिणत उक्त जीवोंने कुछ कम नौ बटे चौदह ($\frac{9}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं।

शंका— मेरुतलसे नीचे पांच राजुप्रमाण स्पर्शनक्षेत्र क्यों नहीं पाया जाता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, नारकियोंसे स्त्री और पुरुषवेदी तिर्यंचों और मनुष्योंमें मारणान्तिकसमुद्घात करनेवाले सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका अभाव है; तथा नरकगतिके प्रति मारणान्तिकसमुद्घात करनेवाले स्त्री और पुरुषवेदी तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंका भी अभाव है।

उपपादपदपरिणत उक्त जीवोंने कुछ कम ग्यारह बटे चौदह ($\frac{11}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं।

शंका— सूत्रमें उपपादपदसम्बन्धी स्पर्शनका प्रमाण क्यों नहीं कहा ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, स्पर्शनानुगमसम्बन्धी सूत्रमें उपपादपदकी विवक्षाका अभाव है।

नरकगतिसे आनेवाले जीवोंकी अपेक्षा पांच राजु और देवगतिसे आनेवाले जीवोंकी

आगच्छंतेहि छ रज्जू फोसिदा त्ति एक्कारह चोद्दसभागा फोसणखेत्तं होदि।

**सम्मामिच्छादिट्ठि-असंजदसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ १०६ ॥**

एदस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्तभंगो, वट्टमाणकालविवक्खादो।

**अट्ठ चोद्दसभागा वा देसूणा फोसिदा ॥ १०७ ॥**

सत्थाणत्थेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, तीदकालविवक्खादो। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विय-मारणंतियपरिणदेहि अट्ठ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। णवरि सम्मामिच्छाइट्ठीणं मारणंतियं णत्थि। उववादपरिणदेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा। णवरि सम्मामिच्छादिट्ठीणं उववादो णत्थि। इत्थिवेदेसु असंजदसम्मादिट्ठीणं उववादो णत्थि।

**संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ १०८ ॥**

---

अपेक्षा छह राजु स्पर्श किये हैं। इस प्रकार ग्यारह बटे चौदह ($\frac{११}{१४}$) भाग उपपादका स्पर्शनक्षेत्र है।

स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि तथा असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १०६ ॥

वर्तमानकालकी विवक्षा होनेसे इस सूत्रकी प्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान जाननी चाहिए।

उक्त जीवोंने अतीत और अनागत कालकी अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ १०७ ॥

स्वस्थानस्थ स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी तृतीय व चतुर्थ गुणस्थानवर्ती जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है; क्योंकि, यहां पर अतीतकालकी विवक्षा की गई है। विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय, वैक्रियिक और मारणान्तिकपदपरिणत उक्त जीवोंने कुछ कम आठ बटे चौदह ($\frac{८}{१४}$) भाग स्पर्श किये हैं। विशेष बात यह है कि सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके मारणान्तिकसमुद्घातपद नहीं होता है। उपपादपदपरिणत उक्त जीवोंने कुछ कम छह बटे चौदह ($\frac{६}{१४}$) भाग स्पर्श किये हैं। विशेषतः यह है कि सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंके उपपादपद नहीं होता है। स्त्रीवेदी जीवोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका उपपाद नहीं होता है।

स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी संयतासंयत जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ १०८ ॥

---

१ असंयतसम्यग्दृष्टिभिः संयतासंयतैर्लोकस्यासंख्येयभागः षट् चतुर्दशभागा वा देशोनाः। स. सि. १, ८.

एवस्स सुत्तस्स परूवणा खेत्तभंगो, विवक्खिदवट्टमाणकालत्तादो ।

**छ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ १०९ ॥**

सत्थाणसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, विवक्खिदातीदकालत्तादो । मारणंतियपरिणदेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, अच्चुदकप्पादो उवरि तिरिक्खसंजदासंजदाणमुववादाभावा ।

**पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टिउवसामग-खवएहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो[1] ॥ ११० ॥**

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगा। अदीदकाले एदेहि सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागो फोसिदो । पमत्तसंजदे तेजाहारपदाणं पि एवं चेव

---

वर्तमानकालकी विवक्षा होनेसे इस सूत्रकी स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान जानना चाहिए ।

स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी संयतासंयत जीवोंने अतीत और अनागतकालकी विवक्षासे कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ।। १०९ ।।

स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकपदपरिणत स्त्रीवेदी और पुरुषवेदी संयतासंयत जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है; क्योंकि, यहांपर अतीतकालकी विवक्षा की गई है । मारणान्तिकपदपरिणत उक्त जीवोंने कुछ कम छह बटे चौदह ($\frac{६}{१४}$) भाग स्पर्श किये हैं, क्योंकि, अच्युतकल्पसे ऊपर तिर्यंच संयतासंयत जीवोंका उपपाद नहीं होता है ।

स्त्रीवेदी और पुरुषवेदियोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण उपशामक और क्षपक गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। ११० ।।

इस सूत्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है । अतीतकालमें स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकसमुद्घातपरिणत इन्हीं उक्त जीवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और मनुष्यक्षेत्रका संख्यातवां भाग स्पर्श किया है । प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें तैजससमुद्घात और आहारकसमुद्घात, इन दोनों ही पदोंमें इसी प्रकारसे स्पर्शनक्षेत्र कहना चाहिए । विशेष बात यह है कि स्त्रीवेदमें

---

१ प्रमत्ताद्यनिवृत्तिबादरान्तानां सामान्योक्तं स्पर्शनम् । स. सि. १, ८.

वत्तव्वं । णवरि इत्थिवेदे तेजाहारं णत्थि । मारणंतिय-परिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो ।

**णउंसयवेदएसु मिच्छादिट्ठी ओघं[1] ॥ १११ ॥**

सत्थाणसत्थाण–वेदण-कसाय–मारणंतिय–उववादपरिणदणवुंसयवेदमिच्छादिट्ठीहि तिसु वि कालेसु जेण सव्वलोगो फोसिदो; विहारपरिणदेहि तिसु वि कालेसु तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो त्ति; तेण ओघत्तं जुज्जदे । किंतु वेउव्वियपदस्स ओघभंगो ण होदि, तत्थ वेउव्वियपदं वट्टमाणकाले तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तमेत्थघणतिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागमेत्तमदीदकाले उभयत्थ वि अट्ठ पंच चोद्दसभागा त्ति ? ण, पदविसेसविवक्खाभावेण ओघणिद्देसस्स विरोहाभावा ।

**सासणसम्मादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ११२ ॥**

---

तैजस और आहारकसमुद्घात, ये दोनों पद नहीं होते हैं । मारणान्तिकपदपरिणत उक्त जीवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग, और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है ।

नपुंसकवेदी जीवोंमें मिथ्यादृष्टी जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान सर्वलोक है ॥ १११ ॥

शंका– स्वस्थानस्वस्थान, वेदना, कषाय, मारणान्तिक और उपपाद, इन पदोंसे परिणत नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि जीवोंने तीनों ही कालोंमें चूंकि सर्वलोक स्पर्श किया है; तथा विहारवत्स्वस्थानपदपरिणत उक्त जीवोंने तीनों ही कालोंमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है; इसलिए सूत्रमें कहा गया ओघपना घटित हो जाता है । किन्तु वैक्रियिकपदका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान घटित नहीं होता है, क्योंकि, वहां पर, अर्थात् ओघप्ररूपणामें (देखो पृ. १४८), वैक्रियिकपदका वर्तमानकालमें तिर्यग्लोकका संख्यातवां भागमात्र है और यहांपर घनतिर्यग्लोकका असंख्यातवां भाग है । अतीतकालमें दोनों ही स्थलोंपर, अर्थात् ओघप्ररूपणामें और आदेशप्ररूपणाके अन्तर्गत, वेदप्ररूपणामें आठ बटे चौदह ($\frac{8}{14}$) तथा पांच बटे चौदह ($\frac{5}{14}$) भागप्रमाण स्पर्शनक्षेत्र कहा है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, पदविशेषकी विवक्षाका अभाव होनेसे सूत्रमें ओघपदका निर्देश विरोधको प्राप्त नहीं होता है ।

नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ११२ ॥

---

१ नपुंसकवेदेषु मिथ्यादृष्टीनां सासादनसम्यग्दृष्टीनां च सामान्योक्तं स्पर्शनम् । स. सि. १, ८.

एवस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगो ।

**बारह चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ११३ ॥**

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि णवुंसयसासणेहि तीदाणागदकालेसु तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणो फोसिदो, पहाणीकदतिरिक्खसासणरासित्तादो । उववादपरिणदेहि एक्कारह चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, णवुंसगवेदतिरिक्खसासणेसुप्पज्जमाणदेव-णेरइयाणं छ-पंचरज्जुबाहल्लतिरियपदरफोसणोवलंभादो । मारणंतियपरिणदेहि बारह चोद्दसभागा फोसिदा, णेरइय-तिरिक्खाणं पंच-सत्तरज्जुबाहल्लरज्जुपदरफोसणोवलंभादो ।

**सम्मामिच्छादिट्ठीहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ११४ ॥**

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगो । सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि णवुंसयवेदसम्मामिच्छादिट्ठीहि तीदे काले तिण्हं

---

इस सूत्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूपणाके समान है ।

नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा कुछ कम बारह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ।। ११३ ।।

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकपदपरिणत नपुंसकवेदी सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंने अतीत और अनागतकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है, क्योंकि, यहांपर तिर्यंच सासादन जीवराशिकी प्रधानता है । उपपादपदपरिणत उक्त जीवोंने कुछ कम ग्यारह बटे चौदह ($\frac{११}{१४}$) भाग स्पर्श किये हैं, क्योंकि, नपुंसकवेदी तिर्यंच सासादनसम्यग्दृष्टि जीवोंमें उत्पन्न होनेवाले देवोंकी अपेक्षा छह राजु और नारकियोंकी अपेक्षा पांच राजु, इसप्रकार मिलकर ग्यारह राजु बाहल्यवाले तिर्यक्प्रतरप्रमाण स्पर्शनक्षेत्र पाया जाता है । मारणान्तिकपदपरिणत उक्त जीवोंने बारह बटे चौदह ($\frac{१२}{१४}$) भाग स्पर्श किये हैं; क्योंकि, नारकियोंके पांच राजु और तिर्यंचोंके सात राजु इसप्रकार बारह राजु बाहल्यवाला राजुप्रतरप्रमाण स्पर्शनक्षेत्र पाया जाता है ।

नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है ? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ।। ११४ ।।

इस सूत्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रके समान है । स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकपदपरिणत नपुंसकवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवोंने अतीतकालमें सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका

---

१ सम्यग्मिथ्यादृष्टिभिर्लोकस्यासंख्येयभागः स्पृष्टः । स. सि. १, ८.

लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो, तिरियरासिस्स पाधण्णादो। मारणंतिय-उववादा णत्थि।

**असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेहि केवडियं खेत्तं फोसिदं, लोगस्स असंखेज्जदिभागो ॥ ११५ ॥**

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणपरूवणा खेत्तभंगा।

**छ चोद्दसभागा वा देसूणा ॥ ११६ ॥**

सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियपरिणदेहि णवुंसगवेद-असंजदसम्मादिट्ठि-संजदासंजदेहि तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागो, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो। एसो 'वा' सद्दट्ठो। मारणंतिय-परिणदेहि छ चोद्दसभागा देसूणा फोसिदा, अच्चुदकप्पादो उवरि तिरिक्खासंजद-सम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं गमणाभावा। उववादपदं णत्थि। णवरि असंजदसम्मादिट्ठीहि उववादपरिणदेहि चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणो।

**पमत्तसंजदप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघं ॥ ११७ ॥**

---

संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है; क्योंकि, यहांपर तिर्यंचराशिकी प्रधानता है। यहांपर मारणान्तिकसमुद्घात और उपपाद, ये दो पद नहीं होते हैं।

नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीवोंने कितना क्षेत्र स्पर्श किया है? लोकका असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥ ११५ ॥

इस सूत्रकी वर्तमानकालिक स्पर्शनप्ररूपणा क्षेत्रप्ररूणाके समान है।

उक्त जीवोंनें अतीत और अनागतकालकी अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥ ११६ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदना, कषाय और वैक्रियिकपदपरिणत नपुंसकवेदी असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीवोंने सामान्यलोक आदि तीन लोकोंका असंख्यातवां भाग, तिर्यग्लोकका संख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है। यह 'वा' शब्दका अर्थ है। मारणान्तिकपदपरिणत उक्त जीवोंने कुछ कम छह बटे चौदह ($\frac{6}{14}$) भाग स्पर्श किये हैं; क्योंकि, अच्युतकल्पसे ऊपर असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत तिर्यंचोंके गमनका अभाव है। यहांपर उपपादपद नहीं होता है। विशेष बात यह है कि उपपादपदपरिणत असंयतसम्यग्दृष्टि जीवोंने सामान्यलोक आदि चार लोकोंका असंख्यातवां भाग और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणा क्षेत्र स्पर्श किया है।

उक्त नपुंसकवेदी जीवोंमें प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान लोकका असंख्यातवां भाग है ॥ ११७ ॥

पमत्ते तेजाहाराभावादो ओघत्तं ण जुज्जदे ? ण, सुत्ते पदविवक्खाए विणा सामण्णणिद्देसादो । सेसं चिंतिय वत्तव्वं ।

**अपगदवेदएसु अणियट्टिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति ओघं[1] ॥ ११८ ॥**

एदस्स सुत्तस्स वट्टमाणादीदकालपरूवणा ओघादो ण भिज्जदि त्ति सुत्ते ओघमिदि भणिदं ।

**सजोगिकेवली ओघं ॥ ११९ ॥**

एगजोगो किण्ण कदो ? ण, पुव्वखेत्तेण सजोगिखेत्तस्स अदीद-वट्टमाण-कालेसु तुल्लत्ताभावादो एगजोगत्ताणुववत्तीए । एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण किंचि वुच्चदे ।

एवं वेदमग्गणा समत्ता ।

शंका– प्रमत्त गुणस्थानमें नपुंसकवेदी जीवोंके तैजस और आहारकसमुद्घातका अभाव होनेसे सूत्रोक्त ओघपना नहीं घटित होता है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, सूत्रमें उक्त दोनों पदविशेषोंकी विवक्षाके विना सामान्य निर्देश किया गया है ।

शेष पदोंका स्पर्शनक्षेत्र विचार करके कहना चाहिए ।

अपगतवेदी जीवोंमें अनिवृत्तिकरण गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ ११८ ॥

इस सूत्रकी वर्तमान और अतीतकालसम्बन्धी स्पर्शनप्ररूपणा ओघस्पर्शनप्ररूपणासे भिन्न नहीं है, इसलिए सूत्रमें 'ओघ' यह पद कहा है ।

अपगतवेदी सयोगिकेवली जिनोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ ११९ ॥

शंका– ऊपरके सूत्रका और इस सूत्रका, अर्थात् दोनों सूत्रोंका, एक योग ( समास ) क्यों नहीं किया ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, प्रमत्तसंयतादिके क्षेत्रसे सयोगिकेवलीके क्षेत्रके अतीत और वर्तमानकालमें समानताका अभाव होनेसे एकयोगपना नही बन सकता है ।

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम है, इसलिए विशेष कुछ भी नहीं कहा जाता है ।

इसप्रकारसे वेदमार्गणा समाप्त हुई ।

---

१ अपगतवेदानां च सामान्योक्तं स्पर्शनम् । स. सि. १, ८.

• कसायाणुवादेण कोधकसाइ-माणकसाइ-मायकसाइ-लोभकसाईसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव अणियट्टि त्ति ओघं[1] ॥ १२० ॥

एदस्स सुत्तस्स अदीद-वट्टमाणकाले अस्सिदूण परूवणे कीरमाणे फोसण-मूलोघादो ण केण वि अंसेण भिज्जदि त्ति ओघमिदि सुत्तवयणं सुट्ठु संबद्धं । तदो मूलोघपरूवणं सुट्ठु संभालिय एत्थ सिस्साणं पडिबोहो कायव्वो ।

लोहगयविसेसावबोहणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदे-

णवरि लोभकसाईसु सुहुमसांपराइयउवसमा खवा ओघं ॥१२१॥

कुदो ? ओघसुहुमसांपराइयउवसम-खवगेहिंतो एदेसिं विसेसाभावा । सो च विसेसाभावो सिस्साणं सण्णिदरिसेयव्वो ।

अकसाईसु चदुट्ठाणमोघं[2] ॥ १२२ ॥

---

कषायमार्गणाके अनुवादसे क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी और लोभकषायी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १२० ॥

इस सूत्रकी अतीत और वर्तमानकालको आश्रय करके प्ररूपणा करनेपर स्पर्शनानुयोगद्वारकी मूल ओघप्ररूपणासे किसी भी अंशसे भेद नहीं है, इसलिए 'ओघ' ऐसा सूत्रवचन सुसम्बद्ध है । अतएव मूल ओघप्ररूपणाको भले प्रकार संभाल करके यहांपर शिष्योंको प्रतिबोधित करना चाहिए ।

अब लोभकषायगत विशेषताके अवबोधनार्थ उत्तर सूत्र कहते हैं-

विशेष बात यह है कि लोभकषायी जीवोंमें सूक्ष्मसाम्परायगुणस्थानवर्ती उपशामक और क्षपक जीवोंका क्षेत्र ओघके समान है ॥ १२१ ॥

क्योंकि, ओघनिरूपित सूक्ष्मसाम्परायगुणस्थानवर्ती उपशामक और क्षपकोंसे कषायमार्गणाकी दृष्टिसे प्ररूपित इन जीवोंके कोई विशेषता नहीं है । वह विशेषताका अभाव शिष्योंके लिए भलीभांति दिखाना चाहिए ।

अकषायी जीवोंमें उपशान्तकषाय आदि चार गुणस्थानवालोंका स्पर्शनक्षेत्र ओघके समान है ॥ १२२ ॥

---

१ कषायानुवादेन चतुष्कषायाणां सामान्योक्तं स्पर्शनम् । स. सि. १, ८.

२ अकषायाणां च सामान्योक्तं स्पर्शनम् । स. सि. १, ८.